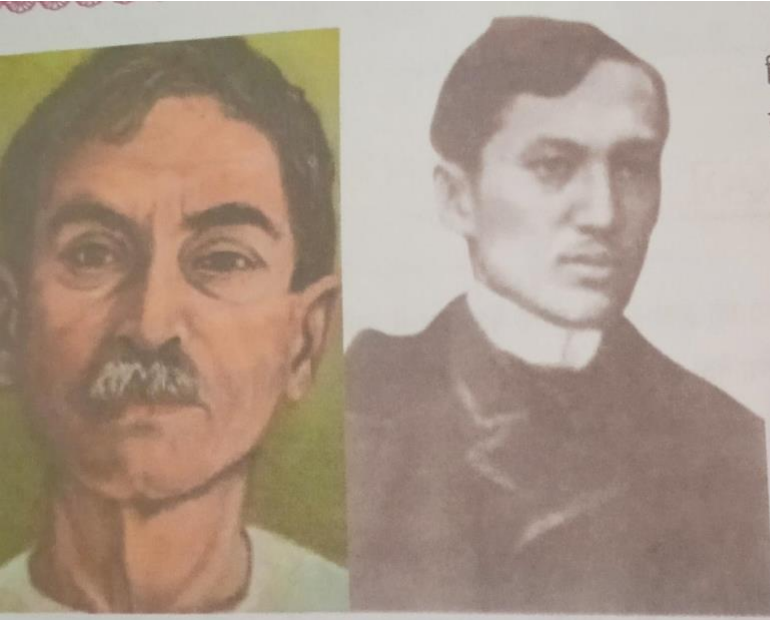


विद्या- भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग-पंचम, विषय- हिंदी

दिनांक-20-09-2021 एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

पाठ-13 जोजी रिजल



‘जोजी रिजल’ उन आदमियों में थे जिनके जीवन की सबसे बड़ी हार उनकी सबसे बड़ी जीत होती है।

एशिया में फिलिपाइन-द्वीपसमूह तो तुम सुना ही होगा। पहले यह द्वीप स्पेन वालों के अधिकार में था। अब उस पर संयुक्त अमरीका का राज्य है। वहां के लोग अपनी असली धर्म, असली भाषा, सब त्याग करके स्पेन का धर्म मानते हैं और स्पेन की भाषा बोलने तथा लिखते हैं। धर्म, भाषा रहन-सहन, सब-कुछ बदल डालने पर स्पेन ने उन लोगों को स्वराज्य नहीं दिया वहां के लोग स्वराज्य के लिए आंदोलन का

थे और स्पेन सरकार कभी वादे करके कभी आपस में फूट डालकर और कभी कठोर नीति से उन लोगों को कुचलती रहती थी। त में वहां एक ‘गांधी’ का अवतार हुआ। उसी ‘गांधी’ का नाम ‘जोजी रिजल’ था।

जोजी रिजल अपने देश की दुर्दशा पर बराबर आंसू बहाता रहता था। विदेशियों के हाथों अपने भाइयों की हत्या, बहना का अपमान और नीति का खून होते देखकर उसे असीम दुख होता था। उसने सुधार के लिए युवकों की संस्थाएं बनाईं, समाचार-पत्र निकाले और व्याख्यानों द्वारा जनता को जगाने लगा। गांधी ही की भांति वह भी प्रजा को शांत रहने के लिए कहा करता था।

स्पेन-सरकार को उसके ये प्रयत्न भयंकर मालूम हुए। उन्होंने उसको पकड़कर कैद कर देना चाहा। उसको यह खबर मिली। वह चुपके से भाग निकला और फ्रांस पहुंचकर कानून पढ़ने लगा। उसकी बुद्धि इतनी तीव्र थी कि उसने 2-3 सालों में ही विज्ञान दर्शन चिकित्सा आदि कई शास्त्रों की सनद हासिल कर ली।

फ्रांस ही में उसने एक उपन्यास लिखा। इसमें उसने उस अन्याय का चित्र खींचा, जो स्पेन वाले उसके देश पर कर रहे थे। तब तक एक सच्ची घटना के आधार पर लिखी गई थी। पुस्तक की भाषा, शैली और चित्रण इतने सजीव थे कि फिलिपाइन में घर-घर तक उसकी चर्चा होने लगी। स्पेन-सरकार ने तुरंत ही पुस्तक का फिलिपाइन में आना बंद कर दिया। मगर लोग उस पुस्तक के लिए इतने सुक हो रहे थे कि चोरी से कपड़े की गांठों में वह लाई जाती थी। लोग छिप-छिपकर उसे पढ़ते थे और रोते थे। इस उपन्यास के प्रचार से ‘जोजी’ का दिल और बढ़ा। उसने एक दूसरा उपन्यास लिखा जो पढ़ने से भी संदर था। व

और जोरी से फिलिपाइन पहुंचाया गया। इस पुस्तक ने तो सानी देश में आम जगया था। लोग खुले खराब सरकार की  
 के कर्मचारी 'जोजी' पर बात पीस-पीसकर रह जाने थे। उसे या जाने, तो कल्प ही खा जाने।  
 मगर 'जोजी' स्पेन-सरकार से जरा भी न डरा। उसने जो कुछ लिखा था, आंखों-देखी बलि थी। उसके पास प्रमाण की  
 फिर वह क्यों डरता। वह किसी भी अदालत के सामने अपनी सफाई पेश कर सकता था। इसलिए, फर्स्ट पुरी हो जाने के  
 फिलिपाइन आ पहुंचा। यहां लाखों स्त्री-पुरुष उसका स्वागत करने के लिए जमा थे। जिस वक्त वह जहाज से उतरा, सारे  
 जमाने मच गई। वह जनता का मित्र था। लोरी ने इतनी धूमधाम से उसका स्वागत किया, सानी उनका राजा आ गया हो।  
 स्पेन-सरकार भी बात-बात देख रही थी। 'जोजी' पर विद्रोह फैलाने वाली पुस्तक लिखने का अपराध तो था ही; अतः वह  
 लिया गया। जनता में बड़ी खलबड़ी मची। जान पड़ता था कि खून-खराबा हुए बिना न रहेगा। पर जोजी ने, हथकड़ियां पहनने  
 के सिपाहियों के बीच में घिरे होने पर भी उन्हें यही उपदेश दिया कि 'शांत रहो'।  
 'जोजी' पर मुकदमा चला दिया गया। मुकदमा तो नाम का ही चलाया जा रहा था, सरकार ने तो उसे बंद देने का पहले ही  
 कर लिया था। कई दिनों तक न्याय का नाटक होता रहा। आखिर उसे मौत की सजा दे दी गई। उसे गोली मार जाने का  
 सुना दिया गया।  
 फौज का एक रिसाला 'जोजी' को सारे शहर में घुमाता हुआ किले के सामने वाले मैदान में ले गया। वहां उसकी हथकड़ियां  
 खोल दी गईं। उसके चारों तरफ फौज के सिपाही खड़े थे। कप्तान ने उससे कहा, "मुझे हुक्म है कि तुम्हें गोली मार दूं। तुम सामने से  
 गोली खाना पसंद करते हो या पीछे से?"  
 जोजी ने कहा, "आप सामने से मारें।"  
 "यह तो हुक्म के खिलाफ है।"  
 "क्या आपको पीछे से गोली चलाने का हुक्म मिला है?"  
 "हां, खेद है कि मुझे यही हुक्म है।"  
 "क्या आप इस हुक्म को बदलने के लिए नहीं कह सकते?"  
 "खेद है कि मुझे इसका अधिकार नहीं है।"  
 "तो फिर आपको जो हुक्म मिला है, उसे पूरा कीजिए।"  
 कप्तान शरीफ था; पर हुक्म के विरुद्ध क्या कर सकता था? उसने एक क्षण के बाद कहा, "आप किरती को अंतिम संदेश  
 भेजना चाहते हो, तो वह मैं पहुंचा दूंगा।"  
 'जोजी' ने धन्यवाद देते हुए कहा, "मेरे भाइयों से मेरा यही संदेश कह दीजिएगा कि जरूरतों के गुलाम न बनें। बस अब,  
 आप अपना काम कीजिए।" यह कहकर 'जोजी' ने आंखें बंद कर लीं। धोया धोया की आवाज आई और उस वीर देशभक्त की  
 ज़ाख जमीन पर गिर पड़ी। स्पेन-सरकार ने उसकी हत्या करके अपनी पाशविकता का ही परिचय नहीं दिया, उसकी पीठ में गोली  
 मारकर अपने कपीनेपन का परिचय भी दे दिया।  
 'जोजी' तो मर गया; किंतु उसका उपदेश आज भी अमर है।

गृहकार्य-

दिए, गए अध्ययन -सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें।